CBSE Class 09 Hindi Course B
NCERT Solutions
स्पर्श पाठ-13 रामधारी सिंह दिनकर [कविता]

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए -

1. नदी का किनारों से कुछ कहते हुए बह जाने पर गुलाब क्या सोच रहा है? इससे संबंधित पंक्तियों को लिखिए।

उत्तर:- यदि परमात्मा ने मुझे भी स्वर दिए होते तो मै भी अपने पतझड के दिनो की वेदना को शब्दो में सुनाता ।

"देते स्वर यदि मुझे विधाता,
अपने पतझर के सपनों का
मैं भी जग को गीत सुनाता"

2. जब शुक गाता है, तो शुकी के हृदय पर क्या प्रभाव पड़ता है?

उत्तर:- जब शुक्र गाता है, तब शुकी का मन प्रफुल्लित हो उठता है और वह उसके प्रेम मे मग्न हो जाती है। इस प्रक्रिया मे उसके पंख फूल उठते है।

3. प्रेमी जब गीत गाता है, तब प्रेमिका की क्या इच्छा होती है?

उत्तर:- प्रेमी जब समय गीत गाता है तब उसकी प्रेमिका की इच्छा होती है कि क्यो नही, मै अपने प्रेमी के गाए गीत की कडी बन गई ।

4. प्रथम छंद में वर्णित प्रकृति-चित्रण को लिखिए।

उत्तर:- प्रथम छंद में नदी एवं गुलाब के प्राकतिक सौदंर्य को प्रस्तुत किया गया है। इसमे नदी के तीव्र गति से बहने का चित्रण किया गया है, जो अपना मन हल्का करने के लिए किनारो से बात करती हुई सी प्रतीत होती है।

उसी प्रकार, गुलाब सी पतझर के दुख तथा पतझर के दिनो मे देखे गए स्वप्न को व्यक्त करने की अपनी इच्छा प्रकट कर रहा है। इस छंद मे प्रकति का मानवीकरण किया गया है, जो नदी एवं गुलाब के माध्यम से व्यक्त हुआ है।

5. प्रकृति के साथ पशु-पक्षियों के सम्बन्ध की व्याख्या कीजिए।

उत्तर:- कविता के दूसरे छदं में शुक-शुकी के माध्यम से कवि ने प्रकति के साथ पशु - पक्षियो के संगंधो की व्याख्या की है। इसमे शुक-शुकी एक घने पेड पर अपना घोसला बनाकर रह रहे है। शुकी घोसले में बैठकर अंडे सेती है और शुक का स्वर पूरे वातावरण में गूँज रहा है और इस मधुर गूँज से न केवल प्रकति बल्कि शुकी भी मदमस्त है।

6. मनुष्य को प्रकृति किस रूप में आंदोलित करती है? अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर:- मनुष्य को प्रकृति अनेक रूपों में आंदोलित करती है। एक ओर नदी का वेगवती धारामय रूप, गुलाब की सुदंरता एवं वक्षो की घनी छॉव हमें बरबस ही अपनी ओर खींच लेती है तो दूसरी और पशु-पक्षियो का मधुर गान तथा उनकी शरीरिक बनावट मनुष्य को

आकर्षित एवं आंदालित करती रहती है।

7. सभी कुछ गीत, अगीत कुछ नहीं होता। कुछ अगीत भी होता है क्या? स्पष्ट कीजिए।
उत्तर:- संसार सुरमय है, शब्दमय है। संसार जो शब्दमय और सुरमय है, वहॉ गीत अवश्य है। जहॉ शब्द नही है, सुर नही है, वहॉ गीत नही है। अत वहॉ अगीत निश्चित होगा, लेकिन यह गीत की ही प्रष्ठभूमि है । दूसरे शब्दो मे कहा जा सकता है कि गीत शब्दो की मधुर अभिव्यक्ति है, जबकि अगीत उसके पूर्व की , स्थ्ति जहॉ विचार मन के अंदर ही उमडते रहते है, बाहर नही आते, पर अगीत किसी भी क्षण गीत का रूप ले सकता है।

8. 'गीत-अगीत' के केन्द्रीय भाव को लिखिए।
उत्तर:- गीत-अगीत कविता मे कवि ने प्राकतिक सौंदर्य के साथ-साथ पशु-पक्षियों के प्रेम एवं मनुष्य तथा प्रकति के साथ उनके संबंधो का चित्रण किया है। नदी के बहाव तथा गुलाब के झूमने मे कवि ने गीत की गूॅंज सुन ली है।

कवि को शुक-शुकी की प्रकतिक चर्चा मे गीत के बोल सुनाई देते है और साथ ही पक्षियो मे मानवीय राग के संकेत भी दिखते है। कवि ने इस कविता मे नदी, गुलाब, शुक-शुकी तथा मनुष्य के आंतरिक संगंधों का गूँथ दिया है।

प्रकति एवं पशु-पक्षी के बीच आल्हा गाता ग्वाला अपनी प्रेमिका के लिए सच्चा साधक बना हुआ है। कवि इन तमाम प्रक्रियाओ के बीच गीत और अगीत की तुलनात्मक सौंदर्य संबंधी दुविधा में है। उसे दुविधा है कि जो गाया जा रही है गीत, वह अधिक सुंदर है या जो नही गाया जा रही है अगीत वह अधिक सुंदर है।

---

2 संदर्भ-सहित व्याख्या कीजिए -
1. अपने पतझर के सपनों का
मैं भी जग को गीत सुनाता
उत्तर:- संदर्भ - प्रस्तुत पघांश प्रसिद्ध कवि रामधारी सिह दिनकर दवारा रचित गीत-अगीत नामक कविता से उदधत है। इस कविता मे उन्होने गीत और अगीत अनुभूति की तुलना करते हुए दोनो को सुंदर बताया है।
व्याख्या - नदी की वैगवती धारा को देखकर गुलाब का मन यह सोचकर दुखी हो रहा है कि ईश्वर ने मुझे वाणी प्रदान क्यो नही की है, अन्यथा मै भी पतझर के दुख को सबके सामने प्रकट कर पाता। यहॉ गुलाब का मानवीय राग प्रकट हुआ है।

2. गाता शुक जब किरण वसंती
छूती अंग पर्ण से छनकर
उत्तर:- संदर्भ - प्रस्तुत पंघाश प्रसिद्ध कवि रामधारी सिह दिनकर दवारा रचित गीत-अगीत नामक कविता से उदधत है। इस कविता मे उन्होने गीत और अगीत अनुभूति की तुलना करते हुए दोनो को सुंदर बताया है।
व्याख्या - किसी घने पेड पर शुक-शुकी का एक जोडा है। शुकी अपने पंख फैलाकर अपने अंडो को सेती है और शुक मधुर गीत गा रहा है। शुक का गीत पतो के अंगो को छुती वसंती किरण की भॉति है, जो शुक और शुकी के अंडो को भरपूर उष्मा प्रदान कर रहा है।

3. हुई न क्यों मैं कड़ी गीत की

बिधना यों मन में गुनती है

उत्तर:- संदर्भ - प्रस्तुत पंघाश प्रसिद्ध कवि रामधारी सिह दिनकर दवारा रचित गीत-अगीत नामक कविता से उदधत है। इस कविता मे उन्होने गीत और अगीत अनुभूति की तुलना करते हुए दोनो का सुंदर बताया है।

व्याख्या - सॉझ के समय में जब प्रेमी ग्वाला प्रसिद्ध लोक गीत आल्हा गाता है, तो उसकी प्रेमिका उस ओजपूर्ण स्वर को सुनकर भव-विहल हो जाती है ओर उसके मन में इच्छा उत्पन्न होती है कि वह अपने प्रिय के गए गीतो की पंक्ति क्यों न बन गई, जिससे वह उसे छू पाती।

---

3. निम्नलिखित उदाहारण में 'वाक्य-विचलन' को समझने का प्रयास कीजिए। इसी आधार पर प्रचलित वाक्य -विन्यास लिखिए -

उदाहारण -

तट पर गुलाब सोचता

एक गुलाब तट पर सोचता है।

क) देते स्वर यदि मुझे विधाता

ख) बैठा शुक उस घनी डाल पर

ग) गूंज रहा शुक का स्वर वन में

घ) हुई न क्यों मैं कड़ी गीत की

ङ) शुकी बैठ अंडे है सेती

उत्तर:-

वाक्य-विचलन	वाक्य-विन्यास
देते स्वर यदि मुझे विधाता	यदि मुझे विधाता स्वर देते।
बैठा शुक उस घनी डाल पर	उस घनी डाल पर शुक बैठा है।
गूंज रहा शुक का स्वर वन में	वन में शुक का स्वर गूंज रहा है।
हुई न क्यों मैं कड़ी गीत की	मैं गीत की कड़ी क्यों न हुई
शुकी बैठ अंडे है सेती	शुकी बैठकर अंडे सेती है।